श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

अप्रैल - चतुर्थ ✲ अंक - 8

सम्पादक : डॉ. अमित जैन
Mob. 9837394448, 9997889995
E-mail : amitraijain78@gmail.com

Address Here

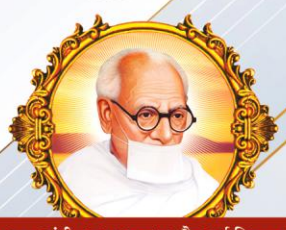

श्रमण संघीय प्रथम पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी म.

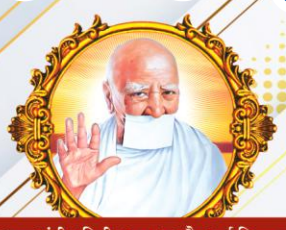

श्रमण संघीय द्वितीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म.

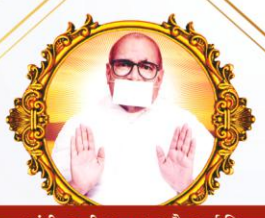

श्रमण संघीय तृतीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.

श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.

विक्रम संवत् - 2083
वीर संवत् - 2552
ई. सन् - 2026

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ अमृत महोत्सव वर्ष शुभारम्भ (1952 - 2026)

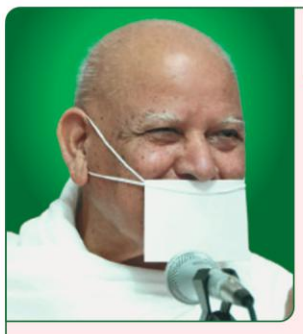

आत्म ध्यान से दृष्टि परिवर्तन

- युग प्रधान आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

जैन दर्शन में ध्यान एक तप है। जैन दर्शन को समझने के लिए पहले तत्व को समझना होगा। तत्व पर श्रद्धा करना ही सम्यक् दर्शन है। इसलिए तत्वार्थ सूत्र में आचार्य उमास्वाति कहते है - सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्ष मार्ग : सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चारित्र मोक्ष मार्ग है। सम्यक् दर्शन अर्थात् सत्य का दर्शन। दर्शन अर्थात् श्रद्धा। श्रद्धा सत्य पर हो, तभी कहा है, 'सद्धा परम दुल्लहा' - श्रद्धा परम दुर्लभ है। सत्य का बोध होना दुर्लभ है, सत्य है तत्व। तत्व 9 बताए गए है, जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध, मोक्ष।

जीव और अजीव का भेद ज्ञान होना सम्यक्त्व है। जैन दर्शन में कहा है - जीव को अजीव माने तो मिथ्यात्व। अजीव को जीव माने तो मिथ्यात्व। जीव को अजीव मानने पर जो ध्यान होता है, उस ध्यान को आर्त-रौद्र ध्यान कहते है। आर्त-रौद्र ध्यान से जीव को 24 ही घंटे कर्म का बंध लगता है। अतः जीव की मुक्ति के लिए सबसे पहले जीव-अजीव का भेद-विज्ञान होना आवश्यक है। प्रत्येक तीर्थंकर की देशना का प्रथम बोध यही है कि 'तुम कौन हो?' जब तक जीव को यह ज्ञान नहीं कि 'मैं कौन हूँ' तब तक हर समय जीव का कर्म बंधन होता है।

अतः प्रत्येक तीर्थंकर भवी जीव को यही बोध देते है कि-'तुम जीवात्मा हो।' ये बोध और इस पर श्रद्धा होने पर, जीव की दृष्टि परिवर्तित होती है। मिथ्या दर्शन शल्य टूटता है और सम्यक् दर्शन प्रकट होता है। तभी कहा है -

सव्व भुयप्प भुयस्स, सम्मं भूयाइं पासओ।
पिहिया सव्वस्स दंतस्स, पावकम्मं न बंधई।। दशवैकालिक सूत्र **4/9**

सम्यग्दृष्टि सभी जीवों में अपने समान जीव देखता है सभी में जीव देखने से वह पाप कर्म नहीं बांधता, अर्थात् वह किसी भी प्रकार के कर्म नहीं बांधता, इसलिए आगमों में कहा है -

सम्मत्तदंसी न करेइ पावं ।। आचारांग सूत्र **1/3/2**

सम्यक्दृष्टि पाप कर्म नहीं बांधता है, अर्थात् सम्यक्त्व परिपक्व होने पर कर्म ही नहीं बांधता है, क्योंकि उसे हर समय, 'मैं जीवात्मा हूँ' इसका बोध रहता है, उसे दुर्लभ बोधि प्राप्त होती है और वह सम्यक्त्व को परिपक्व करता है। अपनी सम्यक्त्व को परिपक्व कर क्षायिक सम्यक्त्व में परिवर्तित करता है।

जैन दर्शन की साधना दृष्टि परिवर्तन की साधना है, अगर दृष्टि अजीव पर है, जड़ पर है, पुद्गलों पर है, अपने को जड़ मानता है तो ध्यान आर्त-रौद्र ध्यान होगा। अनादिकाल से जीव, आर्त-रौद्र ध्यान में पड़ा कर्म बंधन कर रहा है और चार गति चौरासी लाख जीवायोनि में यात्रा कर रहा है। इसलिए तीर्थंकरों ने आर्त-रौद्र ध्यान को हेय बताया है।

धर्म ध्यान व शुक्ल ध्यान को उपादेय बताता है, हेय अर्थात् छोड़ने योग्य, उपादेय अर्थात् ग्रहण करने योग्य। (क्रमशः)

अध्यक्षीय

श्रमण संघ अमृत महोत्सव वर्ष : आत्मजागरण, एकता और सेवा का पावन पर्व

- अतुल जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष जैन कॉन्फ्रेंस

E-mail : ajvk1973@gmail.com

अक्षय तृतीया का यह पावन दिवस हम सभी के लिए केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि आत्मचिंतन, कृतज्ञता और नव-संकल्प का अवसर है। सूरत में विराजमान पूज्य आचार्य सम्राट डॉ. शिवमुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के अमृत महोत्सव वर्ष का शुभारम्भ सम्पूर्ण जैन समाज के लिए एक आध्यात्मिक उत्सव का क्षण है।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का सन् 1906 में उदय केवल एक संगठन का जन्म नहीं, बल्कि श्रमण संस्कृति के संरक्षण और प्रसार हेतु जागृत सामूहिक चेतना का प्रकट रूप था। 1933 का अजमेर सम्मेलन और 1952 में घाणेराव-सादड़ी का ऐतिहासिक संकल्प इस चेतना के विस्तार के महत्वपूर्ण पड़ाव रहे। श्रमण संघ की स्थापना में जैन कॉन्फ्रेंस की अग्रणी भूमिका रही है, इसी कारण इसे पूज्य आचार्यों द्वारा "मातृसंस्था" का स्नेहिल सम्मान प्राप्त हुआ।

श्रमण संघ के 75वें वर्ष में प्रवेश करते हुए यह अवसर हमें उस तप, त्याग और समर्पण को नमन करने का है, जिसने 22 सम्प्रदायों को "एक आचार्य, एक समाचारी" के दिव्य सूत्र में जोड़ा। यह केवल संगठन नहीं, बल्कि आत्मानुशासन, समन्वय और साधना का जीवंत प्रतीक है।

यह अमृत महोत्सव वर्ष बाह्य उत्सव से अधिक आंतरिक जागरण का आह्वान है - अपने भीतर संस्कारों को पुष्ट करने का, संगठन के प्रति समर्पण को गहरा करने का और सेवा को साधना के रूप में अपनाने का। देशभर में आयोजित होने वाले विविध धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम केवल आयोजन नहीं, बल्कि आत्मोत्थान की साधना बनें-यही इस वर्ष का मूल भाव है। अमृत महोत्सव का प्रतीक (लोगो) हमें एकत्व और आत्मीयता का स्मरण कराता है, वहीं डिजिटल प्लेटफॉर्म नई पीढ़ी को धर्म से जोड़ने का सेतु बनेगा।

मैं संत-साध्वीवृंद के पावन सान्निध्य में समस्त श्रावक-श्राविकाओं से विनम्र प्रार्थना करता हूँ कि वे इस अमृत महोत्सव वर्ष को बाहरी उत्सव से आगे बढ़ाकर अपने जीवन में धर्म के अनुभव का माध्यम बनाएं। आइए, हम सब मिलकर इस वर्ष को केवल मनाएँ नहीं, बल्कि जीएँ - संस्कारों में, सेवा में और साधना में। यही सच्चा अमृत है, यही हमारी साधना और यही हमारा पथ है।

सम्पादकीय

आस्था, परंपरा और संवैधानिक मर्यादा : दिगंबर जैन साधुओं की सार्वजनिक उपस्थिति पर भारत के सर्वोच्च न्यायालय में उठा प्रश्न !

- डॉ. अमितराय जैन, राष्ट्रीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस

भारतीय लोकतंत्र की सबसे बड़ी शक्ति उसकी विविधता है-धर्म, परंपरा और आस्थाओं की वह बहुलता, जो सदियों से इस भूमि की आत्मा रही है। किन्तु जब यही परंपराएँ आधुनिक संवैधानिक मूल्यों और सामाजिक मानकों के साथ संवाद करती हैं, तो कई बार जटिल प्रश्न खड़े हो जाते हैं। हाल ही में एक महत्वपूर्ण संवैधानिक प्रश्न सामने आया है, जिसमें यह विचार किया जा रहा है कि क्या न्यायालय जैन धर्म के दिगंबर संप्रदाय के नग्न साधुओं के सार्वजनिक रूप से उपस्थित होने पर प्रतिबंध लगा सकते हैं। यह मुद्दा तब उभरा जब त्रावणकोर देवस्वम बोर्ड (TDB) ने उच्चतम न्यायालय के समक्ष इस विषय को उठाया।

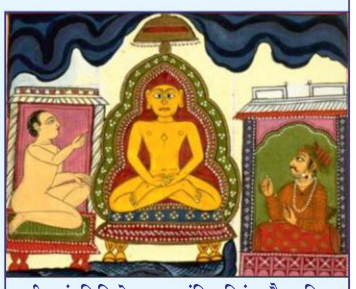

प्राचीन पांडुलिपि के पृष्ठ पर अंकित दिगंबर जैन मुनि का दुर्लभ चित्र, 18वीं शताब्दी, विदेश में मौजूद निजी संग्रह

दिगंबर जैन परंपरा में नग्नता कोई सामान्य सामाजिक व्यवहार नहीं, बल्कि त्याग, वैराग्य और पूर्ण आत्मसंयम का सर्वोच्च प्रतीक है। यह उस साधना का बाह्य रूप है, जिसमें साधु समस्त भौतिक आसक्तियों का परित्याग कर देते हैं। इसलिए इसे केवल 'नग्नता' के संकीर्ण दृष्टिकोण से देखना न तो न्यायसंगत है और न ही ऐतिहासिक रूप से उचित।

वर्तमान विवाद का केंद्र यह है कि क्या ऐसी धार्मिक परंपराएँ, जो समाज के एक बड़े वर्ग को असामान्य या असहज प्रतीत हो सकती हैं, उन्हें 'सार्वजनिक नैतिकता' के नाम पर सीमित किया जा सकता है? भारतीय संविधान का अनुच्छेद 25 प्रत्येक नागरिक को धर्म की स्वतंत्रता देता है, परंतु यह स्वतंत्रता 'सार्वजनिक व्यवस्था, स्वास्थ्य और नैतिकता' के अधीन है। यहीं से न्यायिक विवेचना का दायरा प्रारंभ होता है। किन्तु यह भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि न्यायालय 'अत्यावश्यक धार्मिक आचरण' (Essential Religious Practice) के सिद्धांत को ध्यान में रखे। यदि कोई परंपरा किसी धर्म की मूल आत्मा से जुड़ी है और सदियों से प्रचलित है, तो उस पर हस्तक्षेप अत्यंत सावधानी से किया जाना चाहिए। दिगंबर साधुओं की नग्नता इसी श्रेणी में आती है, जिसे जैन समाज केवल स्वीकार ही नहीं करता, बल्कि उसे आध्यात्मिक आदर्श के रूप में पूजता है।

(शेष पृष्ठ 5 में)

J. P. Jain Foundation

(स्व. श्री जय प्रकाश जैन की पुण्य स्मृति में स्थापित)

सेवा, करुणा और अहिंसा के मूल्यों को आत्मसात करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहयोग पहुँचाने के उद्देश्य से निम्न जनकल्याणकारी सेवा-कार्यों का सतत् संचालन

चेयरमैन अभय जैन | महामंत्री अतुल जैन | कोषाध्यक्ष अमित जैन

- जैन हेल्थकेयर सेंटर के माध्यम से निःस्वार्थ एवं समर्पित स्वास्थ्य सेवाएं।
- भिवानी में फूड वैन द्वारा जरूरतमंदों को नियमित भोजन वितरण।
- दर्द निवारक - महाउपयोगी नाकोडा भैरव लाल तेल का देश भर में निःशुल्क वितरण।
- निर्धन विधवाओं एवं असहाय वर्गों को राशन सहायता।
- जीव-दया के संरक्षण एवं करुणा आधारित सेवा अभियान।
- साधर्मी बंधुओं को हर प्रकार की सहायता।

MATUSHRI BHAWAN, 537/5, Doodh Wali Gali, Mehrauli, New Delhi-110030 9717524774 Email.: foundationjpjain@gmail.com

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के पदाधिकारी साधु-साध्वीवृंद

युगप्रधान, ध्यानयोगी, आचार्य सम्राट् परम पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा.

आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.

उपाध्याय मण्डल

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म.सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म.सा. 'प्रथम'

प्रवर्तक मण्डल

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा.

मंत्री मण्डल

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म.सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म.सा. 'कमलेश' (संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

सलाहकार मण्डल

परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म.सा. 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डल

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म.सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-विश्वस्त मण्डल

श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - चेयरमैन	93021 03817
श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838
श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना	98505 00015
श्री सुभाष ओसवाल जैन, नई दिल्ली	98110 45440
श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336
श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035
डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
श्री प्रकाश धारीवाल जैन, पुणे	98222 42795
श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
श्री उगमचंद गांधी जैन, इचलकरंजी	93260 22525
श्री विनय कुमार जैन, पानीपत	83968 00000
श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
श्री राजीव जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98110 42280
श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, छत्रपति संभाजीनगर	82862 00000
श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की मातृसंस्था
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण-कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अतुल जैन, दिल्ली	98110 75336
राष्ट्रीय महामंत्री : प्रो. डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष : श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	83968 00000
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विजय जैन, पानीपत	98966 00022
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री नरेश बोहरा जैन, मुंबई	76665 40600
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष : श्री जसवंत जैन, दिल्ली	98104 35108
राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष : श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567

मातृसंस्था श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के तत्वावधान में वर्ष भर आयोजित होने वाले श्रमण संघ अमृत महोत्सव वर्ष के लोगो (प्रतीक) का हुआ लोकार्पण

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के अमृत महोत्सव वर्ष का हुआ शुभारम्भ

सूरत (गुजरात) : दिनांक 20 अप्रैल 2026, सोमवार को अक्षय तृतीया का भव्य आयोजन तप सूर्य आचार्य सम्राट डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. के सान्निध्य में आयोजित हुआ। भगवन् ने अपने उद्बोधन में फरमाया कि आज अक्षय तृतीया का पावन दिवस व गुरु ज्ञान जन्म जयन्ती का भी अवसर है और आज से ही श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के अमृत महोत्सव वर्ष का भी शुभारम्भ हो रहा है इस पावन अवसर पर विशेष रूप से श्वेताम्बर मूर्तिपूजक परम्परा के विजय वल्लभ समुदाय के गच्छाधिपति पद्मश्री आचार्य श्री नित्यानन्द सूरीश्वर जी म.सा. आदि ठाणा का विशेष मंगल सान्निध्य प्राप्त हुआ।

आचार्य भगवन् ने श्रमण संघ के 75वें वर्ष में प्रवेश पर फरमाया कि हमारा यह श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ अनेक भव्यात्माओं के निस्वार्थ त्याग का फल है। 22 सम्प्रदायों के आचार्यों ने अपने आचार्य पद का त्याग कर एक आचार्य एक समाचारी के भाव सामने रखते हुए श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की स्थापना की। इस स्थापना में हमारी मातृसंस्था श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का बहुमूल्य योगदान है। श्रमण संघ आज अपने 74 वर्ष पूर्ण कर 75वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। जैन कॉन्फ्रेंस के तत्वावधान में इसका अमृत महोत्सव आयोजन सादड़ी की पुण्य धरा पर होना संभावित है। आचार्यश्री जी ने इस अवसर पर गच्छाधिपति पद्मश्री आचार्य श्री नित्यानन्द सूरीश्वर जी म.सा., राजस्थान प्रवर्तिनी आर्या डॉ. सुप्रभाजी, महासाध्वी विजयलता जी को आदर की चादर भेंट की।

अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉफ्रेन्स के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जैन ने अपने वक्तव्य में जैन कॉन्फ्रेंस के समस्त राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से पूज्य आचार्य भगवान के 40 वर्षों से निरन्तर चल रहे उनके अद्वितीय वर्षीतप और साधना के लिए हार्दिक वंदन - अभिनंदन करते हुए सभी तपस्वी साधु-साध्वी भगवंतों एवं समस्त श्रावक-श्राविकाओं को हार्दिक मंगलकामनाएँ प्रेषित किया। साथ ही श्री आल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस द्वारा आरंभ किये जा रहे डिजिटल प्लेटफार्म की घोषणा करते हुए बताया कि आज इसके अंतर्गत Home, About Us, Shraman Sangh, News & Events, Live, Knowledge Center तथा Membership जैसे प्रमुख सेक्शन प्रारंभ किए जा रहे हैं, जिसका विस्तार भी निकट भविष्य में चरणबद्ध रूप से किया जाएगा। साथ ही यह एक ऐसा माध्यम होगा, जिसके द्वारा हम समाज को जोड़ने और धर्म की प्रभावना को आगे बढ़ाने का कार्य होगा। राष्ट्रीय महामंत्री श्री अमितराय जैन ऐतिहासिक तथ्यों को जोड़ते हुए अपने सारगर्भित विचार रखे। राष्ट्रीय पर्यवेक्षक श्री सुभाष ओसवाल जैन, श्रावक समिति के महामंत्री श्री मुन्नालाल जैन ने अपने भाव प्रकट किये।

इस अवसर पर आचार्य श्री आत्मारामजी महाराज द्वारा टीकाकृत श्री अनुत्तरोतपातिक सूत्र - तृतीय संस्करण, श्री उत्तराध्ययन सूत्र पद्यमय संस्करण अनुवाद स्वाध्यायी धर्मीचन्द चोपड़ा, अंतर्मन के स्वर-निशांत मुनि भजन संकलन, "प्रमाद से प्रमोद" सजग जीवन की साधना - लेखक गुरुभक्त श्री अतुल जैन आदि ग्रंथों व पुस्तकों का विमोचन किया गया। इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय पदाधिकारियों की उपस्थिति के मध्य श्रमण संघ अमृत महोत्सव वर्ष के लोगो (प्रतीक) का लोकार्पण हुआ। साथ ही श्रमण संघ जैन पंचांग मोबाईल एण्ड्रोइड एप्लीकेशन का भी लोकार्पण हुआ।

इस कार्यक्रम के सफल आयोजन की व्यवस्था हेतु श्री जयन्तीभाई कुकड़ा, श्री आकाश मादरेचा, श्री मंजीत कोठारी, श्री विकास सिंघवी, श्री अमित मेहता, श्री गौतम मेहता, श्री विजय गन्ना, श्री गोपाल गन्ना आदि का स्मृति चिन्ह द्वारा सम्मान किया। अक्षय तृतीया के शुभ अवसर पर देशभर से आए 165 वर्षीतप आराधकों व 18 साधु-साध्वीवृंद सहित कुल 183 पारणे आचार्य भगवन् के सान्निध्य में सम्पन्न हुए।

कथा-कहानी योगिराज की कहानियाँ -प्रवर्तक श्री सुभद्र मुनि

शब्दों का जादू

एक सम्राट था! युवा था! अंग-अंग से यौवन की मादक गंध फूट रही थी। चलता तो लगता - सब राजा इसके सामने बौने हैं। एक दिन बड़ी सुबह में उसे एक विचित्र स्वप्न दिखाई दिया। 'स्वप्न था कि उसके सारे दाँत टूट कर मुँह में भरे चनों की तरह गिर पड़े हैं।' स्वप्न टूटा तो पसीने-पसीने हो गया। मारे चिंता के बुरा हाल हो गया। बिस्तर से तो उठ बैठा मगर जवानी का सारा चैन उसे लगा जैसे समाप्त हो गया हो। भरी पूरी जवानी और मुँह में एक भी दाँत नहीं।

ख्याल आया। पास ही पत्नी सो रही थी उसे तुरन्त जगाया। बोला प्रिये! स्वप्न आया था अभी-अभी मेरे मुँह में एक भी दाँत नहीं रहा। मैं बूढ़ा हो गया हूँ। पत्नी बोली - ''स्वप्न में टूटे हैं न दाँत ! वैसे तो नहीं। संभाल लो अगर मुँह में दाँत हैं तो फिक्र बिल्कुल मत करो।''

''फिक्र कैसे नहीं होगी। मेरे मुंह में एक दाँत नहीं रहा। तुम कह रही हो फिक्र ही मत करो?''

सवेरा हुआ। युवा सम्राट ने तुरन्त स्वप्न फल बताने वालों को बुलवा लिया। उन्हें स्वप्न बताया। एक स्वप्न शास्त्र-वेत्ता ने कहा - महाराज! निःसंदेह स्वप्न एकदम अशुभ है। स्वप्न फल स्पष्ट कह रहा है - आपका पूरा परिवार आपकी आँखों के सामने नष्ट होगा। देखते-देखते तुम्हारा प्रिय से प्रिय व्यक्ति मृत्यु की गोद में चला जाएगा। तुम्हारा कोई उपाय काम नहीं आएगा। स्वप्न पाठक की बात से पूरी राज्य सभा में गहरा सन्नाटा छा गया। सबके चेहरे उदास हो गए। इतने में दूसरे एक स्वप्न पाठक की ओर सम्राट ने जिज्ञासा भाव से देखा। दूसरा स्वप्न पाठक कहने लगा - आज आपका स्वप्न सुना है। एक दिन इस पर विचार करना होगा। महाराज, मैं तो तब इस संबंध में कुछ कह पाऊँगा। सम्राट ने कहा - ''ठीक कल सुबह इस संबंध में अपनी बात कहना।''

अगले दिन वह ज्योतिषी आया। बड़ी स्नेह भरी वाणी में उसने शब्दों का चमत्कार कहा - सम्राट! स्वप्न के संबंध में तुम्हारे अंतर में जो गलत धारणा बन गई है पहले तो आप उसे निकाल कर बाहर कीजिए। यह स्वप्न आपकी दीर्घायु को सूचित करता है। आपके तो परिवार के किसी भी व्यक्ति को आपकी मुत्यु का बुरा दिन देखने का अवसर प्राप्त नहीं होगा।

युवा सम्राट दूसरे स्वप्न फल वेत्ता की बातें सुनकर बहुत खुश हो गया। उसने दूसरे ज्योतिषी को भरपूर पुरस्कार भी दिया और सम्मानपूर्वक विदाई भी और पहले ज्योतिषी को जेल में बंद कर दिया। सोचने जैसी बात है। पहले ज्योतिषी की बात में और दूसरे स्वप्न फल वेत्ता की बात में अन्तर ही कितना था? दोनों एक ही बात कह रहे थे। दोनों का एक ही अर्थ था - सम्राट के परिवार जनों की मृत्यु उसकी आँखों के सामने होगी। केवल शब्दों के प्रयोग एवं प्रस्तुति का अन्तर है। इस शब्द प्रयोग से एक को पुरस्कार मिल रहा था तो दूसरे को जेल! ऐसा होता है शब्दों का चमत्कार।

समृद्धि के बीच असुरक्षा का प्रश्न जैन समाज के लिए आत्ममंथन का समय

- सुगाल चंद जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में जहाँ अनेक धर्म और संस्कृतियाँ सह-अस्तित्व में फल-फूल रही हैं, वहाँ जैन समाज एक अत्यंत विशिष्ट स्थान रखता है। संख्या की दृष्टि से भले ही जैन समाज अल्पसंख्यकों में भी अल्पसंख्यक है-2011 की जनगणना के अनुसार मात्र 0-44%, परन्तु अपनी जीवनशैली, मूल्यों, और उपलब्धियों के कारण यह समाज अत्यंत प्रभावशाली और सम्माननीय रहा है।

जैन समाज ने अपने पुरुषार्थ, परिश्रम और नैतिकता के बल पर न केवल आर्थिक समृद्धि अर्जित की है, बल्कि शिक्षा, व्यवसाय, स्वास्थ्य और सामाजिक सेवा के क्षेत्र में भी अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। प्रति व्यक्ति आय के मामले में यह समाज अग्रणी माना जाता है, साक्षरता दर लगभग शत-प्रतिशत है और महिलाओं में भी शिक्षा का स्तर अत्यंत उच्च है। वर्तमान युवा पीढ़ी लगभग पूरी तरह स्नातक है, जो समाज के उज्ज्वल भविष्य का संकेत देती है।

आज आवश्यकता है कि जैन समाज इस विषय पर गहराई से चिंतन करे। केवल आर्थिक समृद्धि ही पर्याप्त नहीं होती, सामाजिक और सांस्कृतिक सुरक्षा भी उतनी ही आवश्यक है।

यह समाज शाकाहार, अहिंसा, करुणा और न्यायप्रियता जैसे उच्च आदर्शों पर आधारित है। दानशीलता इसकी पहचान है-अपनी आय का एक बड़ा हिस्सा समाजोपयोगी कार्यों में समर्पित करना जैनो की परम्परा रही है। व्यापार और उद्यमिता में भी जैन समाज अग्रणी है, जहाँ अधिकांश लोग स्वरोजगार, उद्योग और पेशेवर सेवाओं से जुड़े हैं।

किन्तु इन सभी उपलब्धियों और आदर्शों के बावजूद एक प्रश्न आज समाज के सामने खड़ा है-क्या कारण है कि इतना समृद्ध, शिक्षित और सशक्त समाज अपने ही देश में अपने तीर्थ स्थलों को लेकर असुरक्षित महसूस करता है? यह प्रश्न केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि अत्यंत गंभीर चिंतन का विषय है। क्या यह असुरक्षा वास्तविक परिस्थितियों से उत्पन्न हो रही है, या यह हमारी सामूहिक मनोवृत्ति का परिणाम है? क्या हम अपने अधिकारों, संरक्षण और संवाद के प्रति पर्याप्त सजग हैं? क्या हम एकजुट होकर अपने धार्मिक और सांस्कृतिक स्थलों की रक्षा के लिए प्रभावी प्रयास कर रहे हैं? आज आवश्यकता है कि जैन समाज इस विषय पर गहराई से चिंतन करे। केवल आर्थिक समृद्धि ही पर्याप्त नहीं होती, सामाजिक और सांस्कृतिक सुरक्षा भी उतनी ही आवश्यक है। हमें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होना होगा, कानूनी और सामाजिक स्तर पर संगठित प्रयास करने होंगे और साथ ही अन्य समुदायों के साथ संवाद और सहयोग की भावना को भी सुदृढ़ करना होगा।

यह भी आवश्यक है कि समाज के भीतर एकता और समन्वय को और मजबूत किया जाए। विभिन्न संगठनों, ट्रस्टों और संस्थाओं को एक मंच पर आकर राष्ट्रीय स्तर पर एक ठोस नीति बनानी चाहिए, जिससे न केवल तीर्थ स्थलों की सुरक्षा सुनिश्चित हो, बल्कि समाज में आत्मविश्वास भी बढ़े।

समृद्धि के साथ यदि सुरक्षा और आत्मविश्वास नहीं हो, तो वह अधूरी रह जाती है। जैन समाज को आज इस दिशा में एक सकारात्मक और संगठित पहल करनी होगी। अंततः यह समय है आत्ममंथन का, आत्मसुधार का और सामूहिक जागरूकता का। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि आने वाली पीढ़ियाँ न केवल समृद्ध और शिक्षित हों, बल्कि अपने धर्म, संस्कृति और तीर्थों के प्रति सुरक्षित और गर्वित भी महसूस करें। अपने ही देश में असुरक्षा का भाव कहीं न कहीं हमारी सामूहिक चेतना को झकझोरता है-अब समय है इसे समझने, स्वीकारने और समाधान की दिशा में ठोस कदम उठाने का।

यूरोप के महान जैन विद्वान : Dr. Moriz Winternitz

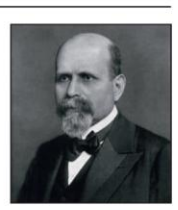

उन्नीसवीं-बीसवीं शताब्दी में यूरोपीय प्राच्यविदों (Indologists) ने भारतीय साहित्य और दर्शन के अध्ययन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। विशेषतः जैन साहित्य, जो दीर्घकाल तक पाश्चात्य जगत में अपेक्षाकृत अल्पज्ञात रहा, उसे व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने में कुछ प्रमुख विद्वानों की निर्णायक भूमिका रही। जर्मनी और यूरोप में प्राच्यविद्या (Indology) के विद्वानों के बीच जैन धर्म के प्रति गहरी जिज्ञासा और अनुराग रहा है। वहाँ के विश्वविद्यालयों में भारतीय दर्शन के अध्ययन की सुदृढ़ परंपरा विकसित हुई, जिसके परिणामस्वरूप जैन धर्म से संबंधित अनेक भ्रांतियाँ दूर हुई।

पश्चिम में जैन धर्म के प्रति जो अज्ञान व्याप्त था, उसे दूर करने में Dr. Hermann Jacobi, Dr. Moriz Winternitz, Dr. Richard Pischel तथा Max Müller जैसे महान विद्वानों ने अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन विद्वानों ने संस्कृत और प्राकृत भाषाओं का गहन अध्ययन कर भारतीय ग्रंथों के वास्तविक स्वरूप को समझने का प्रयास किया। भारतीय भाषाओं को सीखने का उनका यही संकल्प अति वंदनीय है। आज भारत देश में ही प्राकृत भाषा का सामान्य ज्ञान भी कितने जैन विद्वानों और पंडितों को है, विचारणीय है।

जीवन और विद्वत्ता : Dr. Moriz Winternitz ऑस्ट्रियाई मूल के एक प्रतिष्ठित इंडोलॉजिस्ट थे, जिन्होंने संस्कृत, प्राकृत तथा भारतीय साहित्य के अध्ययन में असाधारण योगदान दिया। उन्होंने वियना विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की और बाद में Prague विश्वविद्यालय में संस्कृत एवं नृविज्ञान (Anthropology) के प्रोफेसर रहे।

संस्कृत के साथ-साथ प्राकृत भाषा पर उनकी गहरी पकड़ ने उन्हें जैन दर्शन के मूल आगमों और साहित्य के अध्ययन में विशेष दक्षता प्रदान की। यह उल्लेख करना महत्वपूर्ण है कि उनकी विद्वत्ता का क्षेत्र केवल भाषा विज्ञान तक सीमित न रहकर सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विश्लेषण तक विस्तृत था।

जैन धर्म में योगदान : उनकी महान कृति "Geschichte der indischen Literatur" (1908-1922), जिसका अंग्रेजी रूप "A History of Indian Literature" के नाम से प्रसिद्ध है, भारतीय प्राच्य साहित्य के अध्ययन की आधारशिला मानी जाती है।

इसके द्वितीय खंड में : जैन आगमों (जैसे आचारांग सूत्र, सूत्रकृतांग, उत्तराध्ययन सूत्र), तत्त्वार्थ सूत्र तथा आचार्य हेमचंद्र और आचार्य हरिभद्रसूरी जैसे आचार्यों के साहित्य का गहन और व्यवस्थित विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। उन्होंने जैन दर्शन की तुलना बौद्ध और वैदिक साहित्य से करते हुए जैन दर्शन की स्वतंत्रता और विशिष्टता को पाश्चात्य जगत में स्थापित करने का अति महत्वपूर्ण एवं स्तुत्य कार्य किया।

प्रमुख जैन-दर्शन संबंधी कार्य : Die Jaina-Literatur (1920) - जैन साहित्य के विकास पर विस्तृत अध्ययन, The Jainas in the History of Indian Literature - जैन साहित्यिक योगदान पर स्वतंत्र निबंध, Catalogue of South Indian Manuscripts (1902) दक्षिण भारत की जैन पांडुलिपियों का।

महत्वपूर्ण सूचीकरण : जर्मन शोध पत्रिकाओं में अपभ्रंश और जैन ग्रंथों पर अनेक समीक्षात्मक लेख, उनकी मित्रता तत्कालीन कई भारतीय चिंतकों से थी जिनमें नोबल प्राइज से सुशोभित रवीन्द्रनाथ टैगोर जैसे महान विद्वान भी थे। यह बौद्धिक संवाद भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रसार में सहायक सिद्ध हुआ।

यह खेद का विषय है कि जिन महान यूरोपीय विद्वानों ने जैन धर्म को विश्व पटल पर प्रतिष्ठित किया, उनके कार्यों से आज के जैन अध्येता अपरिचित हैं। उनकी मूल शोधकृतियाँ जो कि एक अमूल्य दार्शनिक धरोहर हैं, जैन पुस्तकालयों में भी सुलभ नहीं हैं। यह स्थिति हमें आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करती है कि हम अपनी विरासत को पहचानें, संरक्षित करें और आगे बढ़ाएँ।

मैं Dr. Moriz Winternitz तथा जैन प्राच्यविद्या के अन्य महान विद्वानों के प्रति विनम्र श्रद्धा व्यक्त करता हूँ, जिनके प्रयासों से जैन धर्म की समृद्ध परंपरा विश्व के सामने आई।

- नीलमकांत (जीवमित्र) मो.: 99103 78087

प्रेस्टीज

प्रतिबद्ध है भारत को समृद्ध एवं प्रबुद्ध बनाने के लिये अपने
सर्वश्रेष्ठ सोया प्रोटीन सोया तेल, वनस्पति, सोया बड़ी गेहूँ का आटा
मैदा, रवा, सूजी और उत्कृष्ट शिक्षा K.G. से Ph.D. के द्वारा
भारत को जरूरत है स्वर्ण पदकों की ओलम्पिक
और नोबल पुरस्कार विजेताओं की
स्वस्थ व प्रबुद्ध भारत के लिये
प्रेस्टीज सोया खाद्य और समग्र शिक्षा
बेहतर भोजन - बेहतर शिक्षा - बेहतर राष्ट्र

प्रेस्टीज फूड्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (अंडर ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज फीड मिल्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (पोस्ट ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज सोया इंडस्ट्रीज	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ग्वालियर
प्रेस्टीज फ्रोटेक लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, देवास
प्रेस्टीज फीड मिल्स	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड साइंस, इंदौर
प्रेस्टीज फैब्रिकेटर्स प्रा. लिमिटेड	प्रेस्टीज पब्लिक स्कूल, इंदौर

प्रेस्टीज ग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज एंड इंस्टीट्यूट्स

स्टार एक्सपोर्ट हाउस (भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त) आई.एस.ओ. : 9000 2001 प्रमाणिक ग्रुप

30, Jaora Compound, M.Y.H. Road, Indore - 452001, M.P.

Phone.: 0731-4011111, 4041111 Fax: 4011107, 2704455 E-mail: info@prestigeindia.com Website: prestigeindia.com

प्रमाद से प्रमोद

सजग जीवन की साधना

पुस्तक से साभार

लेखक-गुरुभक्त अतुल जैन

(गतांक से आगे)

अध्याय 15

परिणाम-आसक्ति और भविष्य-भय (गहन विस्तार)

नियंता भाव की जड़ में यदि और गहराई से देखा जाए, तो वहाँ दो शक्तियाँ सक्रिय मिलती हैं परिणाम-आसक्ति और भविष्य-भय। कर्ता कहता है - "मैं कर रहा हूँ।" नियंता कहता है-"सब मेरे अनुसार हो।" और परिणाम-आसक्ति कहती है-"जो होगा, वैसा ही होना चाहिए जैसा मैं चाहता हूँ।" यहीं से संघर्ष प्रारंभ होता है।

1. परिणाम से जुड़ने की प्रक्रिया : जब व्यक्ति किसी कार्य में प्रवेश करता है, तो स्वाभाविक रूप से वह एक दिशा तय करता है। दिशा रखना समस्या नहीं है, पर दिशा से चिपक जाना समस्या है। जब लक्ष्य पहचान बन जाए, जब सफलता आत्म-मूल्य बन जाए, तब परिणाम-आसक्ति जन्म लेती है। यहाँ व्यक्ति केवल कर्म नहीं कर रहा-वह भविष्य को पकड़ने की कोशिश कर रहा है।

2. भविष्य-भय का जन्म : परिणाम अनिश्चित है और अनिश्चितता मन को भयभीत करती है। "यदि यह नहीं हुआ तो?" "यदि असफल हो गया तो?" "यदि लोग क्या सोचेंगे?" भविष्य-भय व्यक्ति को वर्तमान से दूर ले जाता है। वह अभी नहीं जी रहा होता, वह संभावित भविष्य में जी रहा होता है। यह भविष्य-जीवन प्रमाद है।

3. परिणाम और पहचान : जब व्यक्ति कहता है - "यदि मैं सफल हुआ तो मैं योग्य हूँ।" "यदि असफल हुआ तो मैं असफल हूँ।" तो उसने परिणाम को अपनी पहचान से जोड़ दिया है। यह जुड़ाव गहरी अस्थिरता लाता है। क्योंकि परिणाम स्थिर नहीं होते। जहाँ पहचान परिणाम से बंधी है, वहाँ भय अनिवार्य है।

4. तुलना और अपेक्षा : परिणाम-आसक्ति तुलना को जन्म देती है। "दूसरे कहाँ पहुँचे?" "मैं पीछे तो नहीं?" "मेरी उपलब्धि पर्याप्त है?" यह तुलना निरंतर बेचैनी उत्पन्न करती है। तुलना वर्तमान को खा जाती है।

5. शरीर पर प्रभाव : जब व्यक्ति परिणाम से चिपका होता है, तो शरीर में सूक्ष्म तनाव बना रहता है। श्वास गहरी नहीं हो पाती। नाभि में हल्का कसाव बना रहता है। मन बार-बार भविष्य की कल्पना करता है। यह दीर्घकालीन तनाव ऊर्जा को असंतुलित करता है।

6. वर्तमान का क्षय : परिणाम-आसक्ति वर्तमान को कमजोर कर देती है। व्यक्ति कर्म नहीं कर रहा होता, वह परिणाम के बारे में सोच रहा होता है। वह कार्य करते समय भी भविष्य की चिंता में उलझा रहता है। यही प्रमाद है- वर्तमान की अनुपस्थिति।

7. स्वस्थ लक्ष्य और आसक्ति में अंतर : लक्ष्य रखना सजगता में संभव है। पर आसक्ति सजगता को ढँक देती है। स्वस्थ लक्ष्य में: 'कर्म पर ध्यान रहता है, 'परिणाम स्वीकार्य होता है, 'सीखने की तैयारी होती है', आसक्ति में : 'परिणाम पर आग्रह होता है, 'असफलता पर तीव्र आघात', 'दूसरों को दोष देना', यह अंतर पहचानना आवश्यक है।

8. परिणाम से स्वतंत्रता : क्या परिणाम छोड़ देना चाहिए? नहीं। परिणाम को नियंत्रित करने की जिद छोड़नी है। कर्म पूर्णता से करें। पर परिणाम को पकड़ें नहीं। यह दृष्टि परिवर्तन भविष्य-भय को कम करता है।

9. समर्पण और विश्वास : जब व्यक्ति स्वीकार करता है कि परिणाम अनेक कारकों से बनते हैं, तो भीतर विश्वास जन्म लेता है। यह विश्वास आलस्य नहीं है। यह सजग समर्पण है। समर्पण का अर्थ है- 'मैं पूर्ण प्रयास करूँगा, पर परिणाम को बाँधूँगा नहीं।'

10. अंतिम स्पष्टता : परिणाम-आसक्ति प्रमाद को गहरा करती है। भविष्य-भय सजगता को ढँक देता है। जब कर्म वर्तमान में होता है और परिणाम स्वीकृति में, तब हल्कापन जन्म लेता है। अगले अध्याय में हम समझेंगे-रक्षक भाव कैसे प्रेम के भीतर छिपकर असुरक्षा में बदल जाता है।

❀❀❀

(क्रमशः)

निभना और निभाना

- डॉ. बी. रमेश गादिया जैन, बैंगलोर (कर्नाटक)

मैं एक पढ़ी-लिखी तलाकशुदा नवयुवती हूँ। ससुराल वालों से और पति से मन मुटाव में मेरे तीन साल बर्बाद हो गये और चार साल कोर्ट कचहरी में बीत गए। आखिरकार मैं कानूनी रूप से जीत गई। अपने एक साल के बच्चे को लेकर मैं अलग हो गयी। कानूनी रूप से उसके हिस्से में जो भी धन-संपत्ति मिलनी थी, प्राप्त हो गई। तलाक के कागजात लेकर अपने पीहर आकर, पास में एक साल के नन्हे मासूम बालक को पास लेटाकर मैं सोचने लगी कि उसने कैसे अपने जीवन का अमूल्य समय व्यर्थ में गँवा दिया। आज कितना सुकून मिला है। लगा जैसे कोई पक्षी पिंजरे से आजाद होकर मुक्त गगन में विचरण कर रहा है।

पीहर आते ही अपने पुराने कमरे में आकर निढ़ाल होकर लेट गई। मेरे जीवन के पिछले 6 साल एक फिल्म रील की तरह घूमने लगें। बचपन से लेकर शादी के पूर्व की सारी बातें मस्तिष्क में उभरने लगी। मेरे जन्म लेने से मम्मी-पापा कितने खुश थे। हाँ, घर के कुछ सदस्य लड़की का जन्म होने से उदास थे, लेकिन मम्मी-पापा बड़े लाड़-प्यार से मेरा पालन-पोषण करने लगे। मेरी हर जायज और नाजायज जिद को पूरा करते। हँसते-खेलते कैसे उसका बचपन बीता, कुछ पता भी नहीं चला। स्कूल में हमेशा अव्वल आती, रूप रंग भी सुंदर था। फिर आगे की पढ़ाई के लिए शहर से बहुत कीमती कॉलेज में दाखिला लिया। परिवारवालों ने अपनी हैसियत नहीं होते हुए भी वहाँ से डिग्री तक पढ़ाई करवाई। एक तो सुंदर रूप सौंदर्य और ऊपर से पढ़ाई में अग्रणी, सो थोड़ा बहुत अहंकार होना स्वाभाविक था। पोस्ट ग्रेजुएशन के बाद माता-पिता को मेरे लिए अच्छे घर घराने में पढ़ें लिखे लड़के की तलाश करने लगे। मम्मी से ज्यादा मैं पापा की लाड़ली परी थी। घर में धन-दौलत भी बहुत थी सो पापा ऐसे परिवार और लड़के की खोज करने लगे जो उनसे उन्नीस न हो। बहुत खोजबीन करने के पश्चात एक योग्य शिक्षित लड़का और घर घराना मिल गया। परिवार वालों ने शादी पर दिल खोलकर खर्चा किया गया।

विवाह के साल दो साल तो बहुत ही हँसी खुशी से बीते और तीसरे साल गोद में, मेरे पुत्र हो गया। शादी के तीसरे साल से ही, तो जैसे वैवाहिक जीवन में ग्रहण लग गया। ससुराल का माहौल ठीक ठाक ही था। ससुराल में एक ननद है, किन्तु ससुर नहीं थे। सासु माँ, कम पढ़ी लिखी थी, लेकिन घरेलू कामकाज में निपुण महिला थी। घर की साफ-सफाई का बहुत ख्याल रखती थी। यही से मेरी और सासु माँ में पहले-पहले थोड़ी बहुत अनबन होती रहती। पति से शिकायत करती तो वे तो माँ के पिछलग्गू थे। हर बार माँ का पक्ष लेते और मुझे ही दोषी ठहराते। मैंने इस बारे में एक दो बार अपनी मम्मी से शिकायत भी की। लेकिन उनका कहना होता कि हर घर में ऐसी छोटी-छोटी नोंक-झोंक होती है। शुरुआत में मुझे भी मम्मी की बात ठीक लगती। लेकिन सहन करने की भी हद होती है। कोई भी छोटी-बड़ी गलती पर मेरे पीहर पर ताने मारना तो सासु माँ की आदत सी हो गई। पतिदेव भी सासु माँ का ही पक्ष लेते। सासु माँ की हर छोटी-बड़ी बातें मुझे कचोटने लगती। ननद से तो हमेशा छत्तीस का आंकड़ा रहा। ननद, मुझसे थोड़ी ज्यादा खुबसूरत और मुझसे भी अधिक पढ़ी-लिखी थी। वास्तव में, मेरे अंदर हीन भावना ही हो गयी थी। सुख-दुःख के हर प्रसंग पर उसका हंसमुख स्वभाव, मेरे लिए जलन का एक कारण रहा। पढ़ाई-लिखाई हो या घर के कामकाज में वह हमेशा तत्पर रहती। यह भी उससे दूरी बनाए रखने का एक महत्वपूर्ण कारण भी रहा।

घरेलू कामकाज में एक बार सासू माँ से थोड़ी ज्यादा ही बोलचाल हो गई। ननद कॉलेज से आए और पतिदेव के दुकान से वापस आएं इससे पहले मैं बोरिया बिस्तर समेट कर अपने पीहर चली गई। मैं पापा की लाडली परी थी, मैंने आवेश-आवेग में दो-चार झूठी सच्ची कहानी बनाकर अपनी सासू माँ, ननद और पतिदेव पर आरोप लगाया। पुत्री के मोह में पापा ने मेरा ही पक्ष लिया। मेरी मम्मी और मेरी ननद ने मुझे समझा बुझाकर पुनः ससुराल में रहने को राजी कर लिया। लेकिन एक बार भड़की आग कब शांत होने वाली थी। कुछ ही दिनों में ससुराल में फिर तू-तू, मैं-मैं होने लगी। मैं कोई अनपढ़ और गंवार तो थी नही। तलाक का केस दर्ज करवा दिया। कोर्ट कचहरी में दो साल निकल गए लेकिन तलाक नहीं मिला। मेरे पापा के पास बहुत जमीन-जायदाद थी और एक पक्के व्यापारी थे। उन्हें मालूम था कि छोटी-मोटी बात पर अदालत, तलाक मंजूर नहीं करती। पापा के शातिर दिमाग ने एक योजना बनाई और मेरे हाथ-पांव पर घाव करवा दिए। उस समय मुझे थोड़ी बहुत वेदना हुई। अदालत, शारीरिक दुःखद वेदना को तलाक का पुष्ट कारण मानती है। जल्दी ही तलाक मिल गया। अपने पुत्र के साथ-साथ अपार धन संपत्ति और जमीन जायदाद लेकर मैं अपने पीहर आ गई।

मैं पढ़ी-लिखी तो थी ही, मुझे विश्वास था कि मुझे आसानी से कोई नौकरी मिल सकती है। सोचते-सोचते मुझे अपने बेटे का ख्याल आया। देखा कि वह गहरी नींद में सो गया। मैं पास में रखे टेबल पर आकर बैठ गई। मुझे संघ समाज के बनाए रीति रिवाजों पर गुस्सा आया। काश मैं शादी ही नहीं करती। स्वतंत्र पक्षी की तरह रहती। मुझे अपनी सासू माँ पर भी बहुत क्रोध आया। कितनी जाहिल, कम पढ़ी-लिखी और गंवार औरत है। आजकल की सोसायटी के अनुसार कभी नहीं बदली। मेरे पतिदेव भले ही शिक्षित और होशियार हों लेकिन एक नंबर के माँ के गुलाम हैं। घर में कोई झगड़ा हो जाए तो पहले मुझे ही डांटते। उनसे पूरी तरह से तंग आ चुकी थी मैं। चलों अच्छा हुआ, देर से ही सही, उन माँ बेटे से पीछा तो छूटा। उनके साथ रहती तो कितना कुछ और झेलना पड़ता। मैं तो बेमौत मारी जाती। यह सब सोचते-सोचते टेबल पर ही नींद आ गई। एकाएक रात करीब साढ़े तीन बजे नींद खुली। चौंक कर देखा तो नन्हा मासूम बेटा पलंग पर सो रहा था। उसके पास जाकर मैं भी लेट गई। लेकिन नींद तो बहुत दूर चली गई। अपने भविष्य के बारे में सोचने लगी। जल्दी ही कोई अच्छी सी नौकरी ढूंढनी पड़ेगी। बेटे को आस-पास के किसी किड्स केयर में भर्ती कर लूंगी। माता-पिता के पास इतना पैसा है कि मुझे आराम से पाल पोस सकें। लेकिन मैं शिक्षित हूँ, इतना तो स्वाभिमान है कि फिर क्यों किसी के अहसान पर जीऊं। ससुराल में थी तो अपने इस अभिमान के कारण कभी पतिदेव के सामने हाथ नहीं फैलाया। मुझे नौकरी मिलते ही दो चार महीने में सब ठीक हो जाएगा।

मेरी एक तलाकशुदा सहेली के जीवन के बारे में सोच कर घबरा उठी। उसका तलाक हुए दस साल हो गया। तलाक के तीन चार साल तक पीहर में सब ठीक था। लेकिन पीहर में भाभी आने के बाद तो सारा मामला बिगड़ गया। भाभी के ताने उसे तीर की तरह चुभने लगें। उसके पिता के देहांत के बाद तो, उसकी भाभी और आक्रमक हो गई। सहसा मैं अपने जीवन के बारे में सोचने लगी। मेरा भी एक छोटा भाई है अगले साल उसकी शादी होने वाली है। अगर मेरी होने वाली भाभी कर्कशा और झगड़ालू आ गयी तो मेरा भविष्य? भावी जीवन के बारे में सोचने से पहले मैंने आंखें बंद कर ली। लेकिन नींद है कि आने का नाम ही नहीं लेती। पिछले साल मेरे मौसी के बेटे की शादी में गयी थी। मौसी की एक बेटी तलाकशुदा थी। वह अपने भाई की विवाह समारोह के लिए बढ़-चढ़ कर हिस्सा ले रही थी।

समारोह में बहुत से रिश्तेदार और सोसायटी के लोग, उसको तो कुछ नहीं कहते लेकिन उनकी तीखी नजरें सबकुछ कह देती। कुछ की उसके प्रति सहानुभूति भी थी, लेकिन अधिकांश लोगों का दृष्टिकोण व्यंग भरा होता। कल मेरे भैया की शादी में अगर लोगों की क्रिया प्रतिक्रिया और रवैया ऐसे ही रहा तो.. अहो! यह कंबख्त नींद क्यों नहीं आती। सहसा मेरी आँखों से आंसू बहने लगे। एक शिक्षित नारी को लोग, अबला क्यूं समझते हैं?

एकाएक एक घटना मेरे दिमाग में घूमने लगी। वैसे तो मेरी धर्म आराधना, संत-सतियो के प्रवचन में बचपन से रुचि नहीं थी। मम्मी के जिद करने पर एक बार किन्हीं महासतीवृंद के व्याख्यान सुनने जाना पड़ा। बेमन से मैंने प्रवचन सुना। आज अचानक मुझे उन महासती के प्रवचन की एक बात, बार-बार याद आने लगी। पूरा व्याख्यान तो याद नहीं रहा हाँ उनकी एक दो बातें याद रह गई। उन महासती जी का कहना था कि परिवार में, संघ में और समाज में सुख शांति से जीना है तो एक बात ख्याल रखें-निभना और निभाना। बदलते समय और परिवेश में अपने आप को परिस्थितियों के अनुसार ढालना ही समझदारी है। जो परिस्थितियों को अपने आप नहीं ढ़ालते यानी निभना और निभाना का मूल सूत्र अपने जीवन में नहीं अपनाते हमेशा दुःख और विषाद को प्राप्त करते हैं। चाहे हम कितने ही पढ़ें लिखे हो, मॉर्डन विचारधारा के हो, 'निभना और निभाना' के मंत्र को न भूलें। ब्रह्ममुहूर्त में ऐसे विचार आते ही मैं गहरी नींद में सो गई।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

जैन कॉन्फ्रेंस कर्नाटक प्रांत की महिला शाखा द्वारा प्रेरणादायी कार्यक्रम

बैंगलोर (कर्नाटक) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के कर्नाटक प्रांत की महिला शाखा द्वारा एक भव्य एवं प्रेरणादायी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का नेतृत्व महिला शाखा अध्यक्षा श्रीमती संतोषबाई पदमचंद आच्छा जैन ने किया। इस अवसर पर चेयरपर्सन श्रीमती रसीला मारलेचा, महामंत्री श्रीमती सपना संघवी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्रीमती इंद्रा गादिया, कोषाध्यक्षा श्रीमती स्नेहलता बाफना, युवा अध्यक्ष श्री आशीष भंसाली, भरत कोठारी, सुनील बंब सहित अनेक गणमान्य सदस्य उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण से हुआ, जिसके पश्चात् श्रीमती संतोष जैन द्वारा स्वागत भाषण प्रस्तुत किया गया। मंच संचालन श्रीमती सपना संघवी एवं श्रीमती रसीला मारलेचा ने कुशलतापूर्वक किया। इस अवसर पर डॉ. त्रिप्ति जैन ने अत्यंत प्रभावशाली प्रेरणादायी वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए महिलाओं में आत्मविश्वास एवं अपने लक्ष्यों के प्रति दृढ़ रहने की प्रेरणा दी। वहीं ललिता हुंडिया ने अपनी गौसेवा के माध्यम से समाज के लिए एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के दौरान कर्मठ नारी शक्ति श्रीमती मंजू लुंकड़ को श्रद्धापूर्वक स्मरण किया गया। सभी योजनाओं के अध्यक्ष एवं मंत्रीगण भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। सभी अतिथियों का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम के अंतर्गत एक आकर्षक फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसमें प्रतिभागियों ने अपनी रचनात्मकता और आत्मविश्वास का शानदार प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार वीना रायसोनी को, द्वितीय पुरस्कार बबीता संघवी को तथा तृतीय पुरस्कार मंजू जैन को प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त सभी प्रतिभागियों को प्रोत्साहन स्वरूप सांत्वना पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। विहार सेवा एक अनमोल सेवा के अंतर्गत साधु-साध्वीजी की सेवा में समर्पित कार्यों की सराहना की गई। इस अवसर पर विहार सेवा में अग्रणी वरिष्ठ महिला प्रकाशबाई बोहरा का विशेष सम्मान किया गया। यह कार्यक्रम नारी शक्ति, सेवा एवं प्रतिभा का एक उत्कृष्ट उदाहरण बनकर सामने आया।

प्रेषक : संतोषबाई आच्छा जैन

जैन कॉन्फ्रेंस युवा शाखा की प्रेरक गोष्ठी एवं कार्यकर्ता सम्मान सहर्ष संपन्न

नई दिल्ली : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस युवा शाखा, दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में एक प्रेरणादायी युवा गोष्ठी का आयोजन श्री जैन स्थानक पश्चिम विहार में श्रद्धा, उत्साह एवं अनुशासनपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में युवाओं की धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में भूमिका को सशक्त बनाने, सक्रिय कार्यकर्ताओं के सम्मान, वर्षभर की गतिविधियों की वार्षिक रिपोर्ट के प्रस्तुतिकरण तथा आगामी योजनाओं पर विस्तृत विचार - विमर्श किया गया। यह आयोजन जैन कॉन्फ्रेंस युवा शाखा, दिल्ली प्रदेश के ऊर्जावान अध्यक्ष विनीत जैन के कुशल नेतृत्व में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम में पावन प्रेरणा स्वरूप संघरत्न, संघसेतु, श्रमण संघीय उपाध्याय प्रवर पूज्य गुरुदेव श्री रवीन्द्रमुनि जी म.सा. का सान्निध्य प्राप्त हुआ। अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में गुरुदेव ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि जो युवा दायित्वशील होता है, वही सच्चे अर्थों में श्रेष्ठ युवा बनता है और वही समाज के लिए वरदान सिद्ध होता है। उन्होंने युवाओं को संयमशील बनने, अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण रखने तथा जीवन में विचारशीलता को अपनाने का संदेश दिया।

इस अवसर पर विशेष सहयोगी के रूप में श्री वर्धमान एस.एस. जैन संघ (रजि.) पश्चिम विहार का महत्वपूर्ण योगदान रहा। कार्यक्रम के दौरान ध्वजारोहणकर्ता के रूप में डॉ. देवराज जैन, राजभूषण जैन एवं मुकेश जैन की गरिमामयी उपस्थिति रही। गोष्ठी के दौरान वर्षभर में समाज एवं युवाओं से जुड़े विविध धार्मिक, सामाजिक एवं सेवा कार्यों की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की गई तथा आगामी वर्ष की योजनाओं पर विचार-विमर्श करते हुए उन्हें और अधिक प्रभावी ढ़ंग से क्रियान्वित करने की रूपरेखा तैयार की गई। साथ ही समाजहित में सक्रिय कार्यकर्ताओं को सम्मानित कर उनके योगदान की सराहना की गई। पूरे कार्यक्रम में धार्मिक उत्साह, अनुशासन और युवाओं की सकारात्मक ऊर्जा का विशेष उत्साहजनक वातावरण देखने को मिला।

कार्यक्रम में प्रमुख रूप से जसवंत जैन, महावीर प्रसाद जैन, 'रिढ़ाना', जयकुमार जैन, नरेश जैन, विनय जैन, रजनीश जैन, संतोष सुरेश जैन, उर्मिल जैन, कौशल्या जैन, विपुल जैन, दिनेश जैन, मुनीश जैन, नरेंद्र जैन, राजेश जैन, ललित जैन, सीमा जैन, राजेश जैन, अनिल जैन, दीपक जैन, अशोक जैन, दिनेश जैन सहित श्रीसंघ पश्चिम विहार के सभी पदाधिकारी, जैन कॉन्फ्रेंस युवा शाखा दिल्ली प्रदेश की समस्त कार्यकारिणी तथा दिल्ली जैन समाज के अनेकों पदाधिकारी एवं युवा बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। अंत में आयोजकों ने सभी उपस्थित युवाओं का आभार व्यक्त करते हुए समाजहित में निरंतर सक्रिय रहने का संकल्प लिया।

प्रेषक : विनीत जैन

(पृष्ठ 1 का शेष 'सम्पादकीय')

इसी संदर्भ में नेपाल के पशुपतिनाथ मंदिर में नागा साधुओं के प्रवेश से संबंधित एक मामले का भी उल्लेख किया गया, जिसमें वहाँ की सर्वोच्च अदालत ने प्रतिबंध लगाने से इनकार किया था। यह उदाहरण दर्शाता है कि धार्मिक परंपराओं को उनके सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भ में समझना आवश्यक है।

समाज और न्याय के बीच संतुलन स्थापित करते समय 'नग्नता' और 'अश्लीलता' के अंतर को समझना भी आवश्यक है। हर नग्नता अश्लील नहीं होती। अश्लीलता वह है, जो कामोत्तेजना या सामाजिक अपमान की भावना उत्पन्न करे, जबकि दिगंबर साधुओं की स्थिति पूर्णतः निर्विकार, संयमित और आध्यात्मिक है। अतः इसे सामान्य सामाजिक मानकों की कसौटी पर तौलना उचित नहीं प्रतीत होता।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि भारत जैसे बहुलतावादी समाज में धार्मिक विविधताओं को स्थान देना ही हमारी संवैधानिक प्रतिबद्धता है। यदि हम परंपराओं को आधुनिकता के एकरूप मानकों में ढ़ालने का प्रयास करेंगे, तो यह हमारी सांस्कृतिक विरासत के क्षरण का कारण बन सकता है।

श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस जोकि संपूर्ण विश्व के स्थानकवासी जैन समुदाय की सर्वोच्च एवं सर्वप्राचीन प्रतिनिधि संस्था है इसलिए हम सभी जैन समुदाय के प्रमुख संस्थाओं के प्रतिनिधियों को सांप्रदायिक सोच और संकीर्णता की मानसिकता का त्याग करते हुए ऐसे सभी मुद्दे जो कि सीधे जैन धर्म और जैन संस्कृति के किसी भी संप्रदाय/शाखा/परंपरा के हित और लाभ से संबंधित है उन पर अपनी प्रतिक्रिया त्वरित रूप से देनी चाहिए।

हमारे मुखपत्र जैन प्रकाश के माध्यम से हम बताना चाहेंगे कि हमारा स्पष्ट मानना है कि न्यायालय, समाज और शासन-तीनों मिलकर इस विषय को संवेदनशीलता और विवेक के साथ देखें। धार्मिक आस्थाओं का सम्मान करते हुए, सार्वजनिक जीवन में संतुलन बनाए रखने का मार्ग ही इस जटिल प्रश्न का समाधान दे सकता है।

विशेषज्ञों का मत है कि न्यायालय को धर्म के आंतरिक आचरणों में हस्तक्षेप करने से बचना चाहिए, जब तक कि वे स्पष्ट रूप से सार्वजनिक व्यवस्था या कानून का उल्लंघन न करें। धार्मिक समुदाय की मान्यताओं और परंपराओं का सम्मान करना लोकतांत्रिक मूल्यों का हिस्सा है। अंततः यह केवल एक कानूनी विवाद नहीं, बल्कि भारतीय समाज की सहिष्णुता, परिपक्वता और संवैधानिक समझ की परीक्षा है।

स्वयं को भगवान मानने की अपेक्षा भक्त बनने की चेष्टा करनी चाहिए

लुधियाना (पंजाब) : एस.एस. जैन सभा सिविल लाईंस लुधियाना के तत्वावधान में श्रमण संघीय सलाहकार पूज्य श्री दिनेशमुनि जी म., डॉ. द्वीपेन्द्र मुनि जी म. एवं डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि जी म. आदिठाणा तथा साध्वीवृंद के सान्निध्य में धर्मसभा का आयोजन हुआ। इस अवसर पर दिनेशमुनि जी म. ने कहा कि भक्त बनना पर भगवान मत बनना, हालांकि आजकल भगवान बनने की होड़ लगी है। साध्वी डॉ. अर्पिता जी म. ने सामायिक शब्द की व्याख्या करते हुए सामायिक का महत्व समझाया व श्रद्धालुओं को सामायिक करने की प्रेरणा दी। साध्वी शमा जी म. ने गुरु का महत्व बताते हुए कहा कि जीवन में सद्गुरु का होना आवश्यक है, गुरु बिना जीवन अधूरा है।

इस अवसर पर एस.एस. जैन सभा सिविल लाईंस के प्रधान श्री अरिदमन जैन, विजय जैन, विपन जैन 'भोला', संजीव जैन पाटनी, युवक संघ के प्रधान अभय जैन, महामंत्री मुकेश जैन, राकेश जैन, सचिन जैन, संजीव जैन आदि मोजूद थे।

R.Mahaveer Chand Ranka
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक - जैन कॉन्फ्रेंस
9444204046
E mail : rmrjainplr@gmail.com

With Best Wishes :
R.Mahaveer Chand Ranka
Rajesh kumar-Aarti Jain Vinod kumar-Seema Jain
Dr Rohit, Mohit, Shruthi, Shubh kumar, Aditi Jain

JAIN JEWELLERY 916 HALL MARK SHOWROOM POLUR
JAIN SILKS & READYMADES Fashion for Family POLUR
varnalaya EXCLUSIVE DESIGNER WEDDING COLLECTION POLUR • TIRUVANAMALAI • VILLUPURAM
JAIN PETRO Reliance Petroleum Retail Outlet, Diversion Road, Polur 606-803
OXFORD MATRIC HR. SEC SCHOOL
OXFORD COLLEGE OF ENGINEERING POLUR

M. Rajeshkumar Ranka
प्रान्तीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस, तमिलनाडु
9994916455
E mail : rajplr246jj@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

इन्दौर में प्रांतीय युवा शाखा द्वारा 551 किलो तरबूज गौशाला में गायों को खिलाया गया

इन्दौर (मध्य प्रदेश) : जीव दया प्रेरक, श्रमण संघीय मंत्री राष्ट्र संत प. पू. गुरुदेव श्री कमल मुनि 'कमलेश' जी म.सा. के पावन दीक्षा दिवस 22 अप्रैल 2026 जैन दिवाकर विचार मंच युवा शाखा मध्य प्रदेश प्रांत युवा अध्यक्ष सौरभ जैन 'नानू' के नेतृत्व में प्रांतीय युवा शाखा द्वारा 551 किलो तरबूज गौशाला में गायों को खिलाया गया। पू. गुरुदेव श्री जी के पावन दीक्षा दिवस पर जैन दिवाकर विचार मंच युवा शाखा मध्य प्रदेश प्रांत के पदाधिकारी एवं समस्त सदस्यगण की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं बधाई-वंदन-नमन आपश्रीजी का आशीर्वाद सदैव हम पर इसी तरह बना रहे गुरुदेव।

जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान प्रांत महिला शाखा द्वारा वर्षीतप तपस्वी सम्मान एवं चौबीसी का आयोजन

उदयपुर (राजस्थान) : श्री तारक गुरु जैन ग्रंथालय में वर्षीतप सम्मान समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत सर्वप्रथम णमोकार मंत्र के मंगल पाठ के साथ की गई। इस अवसर पर बीस वर्षीतप आराधक तपस्वियों का तिलक लगाकर, उपरना ओढ़ाकर, केसर, मिश्री एवं बादाम के द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम में स्वागत भाषण अध्यक्ष डॉ. पुष्पा खोखावत जैन ने देते हुए कहा तेरह मास की कठिन तपस्या आदिनाथ भगवान की याद दिलाती है। सभी तपस्वियों की बहुत-बहुत अनुमोदना करते हैं। कार्यक्रम का संचालन महामंत्री डॉ. शिल्पा नाहर जैन द्वारा किया गया। वर्षीतप तपस्वियों के नाम जिनका जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान प्रांतीय महिला शाखा द्वारा सम्मान किया गया है : राजकुमारी नलवाया, तारा भंडारी, सुनीता बोकड़िया, सोनिका सुराणा, संगीता जी बोहरा, विजय सिंह जी भाणावत, सुशीला भाणावत, कंचन हरकावत, मीठालाल हरकावत, विजेंद्र कोठारी, कमला जोटा, मिठू बाई, मीठालाल तलेसरा 'थूर वाले', पुष्पा सिंघवी, अनिता बोकड़िया, मंजुलता जावरिया, नीलम पामेचा, राजश्री जैन, सुरेश जैन एवं राशि जैन।

इस आयोजन में जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान प्रांतीय महिला शाखा की 60 से भी अधिक सदस्याएं सम्मिलित हुईं। सभी ने सामूहिक रूप से चौबीसी गाकर तपस्वियों की अनुमोदना की। इस अवसर पर वरिष्ठ मार्गदर्शक रजनी डांगी, वरिष्ठ उपाध्यक्षा रेखा जैन, पुष्पा सुराना, सुनीता मांडावत, राष्ट्रीय उपाध्यक्षा मंजु सिरोया सहित अनेक सदस्याएं उपस्थित रहीं। अंत में सभी के लिए अल्पाहार रखा गया। कार्यक्रम में तप अनुमोदना कर सभी को आनंद की अनुभूति हुई।

प्रेषक : पुष्पा खोखावत जैन

तप अनुमोदना

स्थानकवासी जैन समाज की एकमात्र सुदीर्घ तपस्वी रत्न सुश्राविका श्रीमती शारदा सज्जनराज कटारिया

हैदराबाद (तेलंगाना) : श्रमणोपासिका शारदा सज्जनराज कटारिया जैन, सिकंदराबाद द्वारा अक्षय तृतीया के पावन दिन 56 वर्षीतप की पूर्णता और 57वें की मंगल शुरुआत की जा रही है। आपकी तपस्या को शत्-शत् नमन। गौरवपूर्ण है कि आपके द्वारा सैकड़ो की संख्या में अठाई, मासखमन इत्यादि दीर्घ तपस्या भी संपन्न की हैं। आपका संपूर्ण परिवार श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के आचार्य एवं साधु-साध्वी परंपरा का अनन्य उपासक है।

श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के विभिन्न पदों पर आपके पति श्रीमान सज्जनराज कटारिया जैन एवं आपके सुपुत्र श्री सुरेंद्र कटारिया जैन अपनी सेवाएं देते रहे हैं और जो आज भी जारी है। शासन देव आपकी इस साधना को निर्विघ्न बनाए रखें। खूब-खूब अनुमोदना।

सुश्राविका उमरावबाई लुणिया जैन आचार्यश्री जी द्वारा तपस्वीरत्ना से अंलकृत

भारतवर्ष की भूमि त्याग और तप की भूमि है। आज बात करनी है एक तपस्वी रत्ना की जिनका 96वें वर्ष की आयु में 55वाँ वर्षीतप पूर्ण कर 56वें वर्षीतप की आराधना में प्रवेश किया है। जिन्होंने सन् 1971 में पूज्य अशोकमुनि म.सा. के मुखारविंद से प्रथम वर्षीतप की आराधना हेतु पच्चक्खान लेकर मंगल शुरुआत कर आजीवन वर्षीतप की भीष्म प्रतिज्ञा ली थी।

अट्ठम, अट्ठाई, ग्यारह, अठारह, मासखमण की आराधना भी उन्होंने की है। 1000 से अधिक पौषध, पिछले 50 वर्षों से पाँव में चप्पल का त्याग, पिछले 60 वर्षों से उबाला हुआ पानी का नियम, आजीवन कंदमूल का त्याग, पिछले छह वर्षों से स्नान का त्याग, जीवन में पशुओं के लिए गजब का करूणा भाव, जीवन में अनाथ लोगों के लिए सेवा भाव, प्रेरणा देकर अपनी भतीजी को संयम मार्ग पर अग्रसर किया, जिनका 70 वर्ष की आयुष्य पूर्ण कर देवलोक हुआ। (पू. साध्वीजी श्री कंचनकवरजी म.)

आज भी प्रतिदिन 8-10 सामायिक और स्वाध्याय करना। दिनांक 16-04-2026 के दिन पू. आचार्य डॉ. श्री शिवमुनि महाराज सा. के कर-कमलों से "तपस्वीरत्ना" का अलंकरण किया गया। ऐसी तपस्वी वीर माता सुश्राविका उमरावबाई लुणिया को बहुत-बहुत अनुमोदना।

दुबई में युद्ध के समय में सेवा देने वाले धीरज जैन ने मरुधर केसरी पावन धाम के किए दर्शन

गुरु मिश्री-रुप-सुकन के अनन्य भक्त युवा समाजसेवी जैन समाज के अंतर्राष्ट्रीय चमकते सितारे जरूरत के समय दुबई में अपने देशवासियों के साथ-साथ विदेशी भाइयों की सेवा एवं रक्षा के लिए तन-मन-धन से समर्पित करने वाले श्रीमान धीरज कांतिलालजी जैन दुबई (मरुधर में कुरडाया निवासी) श्री मरुधर केसरी पावन धाम जैतारण गुरु दर्शन के लिए पधारने पर पावन धाम जैतारण ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष श्री विमल मेहता, सहमंत्री अशोक बंब, उगमराज बंब, महेंद्र बोहरा, जितेंद्र बोहरा व सभी गुरुभक्तों ने माला शॉल साफा के द्वारा बहुमान किया। श्री धीरज जैन ने दोनों गुरु भगवंतो की समाधि के दर्शन किए, 4 से 5 घंटे पावन धाम में रुके और अंत में उन्होंने यह कहकर विदाई ली कि गुरु भगवंतो के पावन धाम के दर्शन करके मैं अपने आपको धन्य महसूस कर रहा हूँ।

महासाध्वी श्री दिव्यप्रभा जी म. द्वारा राजस्थान में निरंतर धर्म प्रचार

भीलवाड़ा (राजस्थान) : महासाध्वी उपप्रवर्तिनी श्री दिव्यप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा बनेड़ा से मांडल, कोचरिया, जोरावरपुरा, बागोर, बोरियपुरा, आमली आदि क्षेत्रों को फरसते हुए 12 अप्रैल को गंगापुर पधारें। गंगापुर वाले श्रद्धालुओं ने लगभग 50 km से बराबर विहार सेवा का लाभ लिया। गुर्जर लोगों ने भी बहुत-बहुत सेवा भक्ति का लाभ लिया। एक-दो दिन यहाँ विराजने की संभावना है। तत्पश्चात सहाड़ा, पोटला पधारेंगे। - अमित सांखला श्रीसंघ गंगापुर सिटी जिला भीलवाड़ा

गौशाला में गौमाता को हरा चारा खिलाया गया

उदयपुर (राजस्थान) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान प्रांत महिला शाखा ने वर्षीतप तपस्वी अनुमोदना हेतु महाकालेश्वर अंबामाता, उदयपुर गौशाला में गौमाता को हरा चारा खिलाया। इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान प्रांतीस महिला अध्यक्ष डॉ. पुष्पा खोखावत जैन, महिल मंत्री कुसुम डांगी जैन, महिला संगठन मंत्री मंजू मेहता जैन, आत्म-ध्यान योजना उपाध्यक्षा सुनीता सामर जैन आदि महिलाएं उपस्थित रहीं।

प्रेषक : पुष्पा खोखावत जैन

दिल्ली पश्चिम विहार में उपाध्याय श्री रवीन्द्र मुनि जी महाराज के सान्निध्य में अक्षय तृतीया पर श्रमण संघ अमृत महोत्सव वर्ष का शुभारंभ

जैन कॉन्फ्रेंस की ओर से मानव सेवा से की गई शुभारंभ की घोषणा 75 नेत्र ऑपरेशन करवाए जाएंगे

नई दिल्ली : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के तत्वावधान में अमृत महोत्सव वर्ष का शुभारंभ अक्षय तृतीया वर्षीतप पारणा महोत्सव के साथ अत्यंत श्रद्धा एवं उल्लासपूर्वक संपन्न हुआ। यह आयोजन श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के 75वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में रविवार, 19 अप्रैल 2026 को प्रातः 8:30 बजे पश्चिम विहार स्थित श्री जैन स्थानक के विशाल सभागार में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का आयोजन संघरत्न, संघ सेतु, श्रमण संघीय उपाध्याय प्रवर गुरुदेव श्री रवीन्द्र मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में हुआ। इस अवसर पर हेमकुल दिवाकर श्री ऋषभ मुनि जी म., मधुर प्रवचनकार श्री पुनीत मुनि जी म. एवं विद्याभिलाषी श्री अर्हम मुनि जी म. के प्रेरणादायी प्रवचन एवं मंगल दर्शन का लाभ श्रद्धालुओं को प्राप्त हुआ। कार्यक्रम स्थल पश्चिम विहार श्रीसंघ द्वारा निर्मित अत्याधुनिक सभागार (ऑडिटोरियम) रहा, जिसमें लगभग 1000 से 1100 व्यक्तियों के बैठने की उत्कृष्ट व्यवस्था है। इस भव्य हॉल की सुविधाएं एवं व्यवस्थाएं उपस्थित जनसमूह द्वारा सराही गई और इसे दिल्ली के प्रमुख सुसज्जित सभागारों में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि माना गया। श्रीमती चारू-मानसी जैन द्वारा प्रस्तुत किया गया मंगल गीत जिसने वातावरण को भक्तिमय बना दिया।

समारोह में अनेक विशिष्ट अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति रही, जिनमें जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जैन, राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अमितराय जैन, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री महेन्द्र जैन बोकरिया, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री महावीर प्रसाद जैन एवं श्री जयकुमार जैन, राष्ट्रीय मंत्री श्री नरेन्द्र कुमार जैन, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुल जैन, राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोष जैन, प्रांतीय महामंत्री श्री ललित जैन ओसवाल, प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री विनीत जैन एवं प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती सीमा जैन प्रमुख रहे।

इस ऐतिहासिक अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जैन ने जैन स्थानक पश्चिम विहार द्वारा संचालित अस्पताल में 75 नेत्र ऑपरेशन (आँखों के ऑपरेशन) करवाने की महत्वपूर्ण घोषणा की, जिसे उपस्थित जनसमुदाय ने सराहना एवं स्वागत किया। समग्र रूप से यह आयोजन श्रद्धा, सेवा और संगठन की भावना का उत्कृष्ट उदाहरण बनकर सामने आया तथा अमृत महोत्सव वर्ष के सफल और प्रेरणादायी प्रारंभ का संदेश दे गया।

प्रेषक : अनिल जैन-मंत्री

अहमदाबाद में जीवदया का महान कार्य संपन्न

अहमदाबाद (गुजरात) : मेवाड़ उप-प्रवर्तक गुरुदेव श्री कोमलमुनि जी म. के 27वें दीक्षा दिवस पर नवदीक्षित हर्षितमुनि जी म. के आहवान पर मेवाड़ जैन युवा संघ पूर्व उपनगर अहमदाबाद जीवदया कार्यक्रम के तहत टेपली हनुमान मंदिर कठवाड़ा गौशाला पर गायों को हरी घास एवं बंदरों को केला और जरूरतमंद बच्चों को बिस्किट वितरण का कार्यक्रम किया गया। कार्यक्रम में सेवा देने हेतु मुकेश ललवानी, हिम्मत तातेड, महावीर बोहरा, मनोज डांगी, प्रकाश चंडालिया, सुनील गांधी, पंकज वडालमिया, विकास गांधी, कमलेश कूकड़ा, नितिन चपलोत आदि का योगदान रहा।

उपाध्याय श्री रवीन्द्र मुनि जी म. की प्रेरणा व प्रयासों से NCERT पाठ्यक्रम में नवकार महामंत्र का समावेश : जैन कॉन्फ्रेंस ने जताया आभार

नई दिल्ली : श्रमणसंघीय उपाध्याय प्रवर श्री रवीन्द्र मुनि जी म. की पावन प्रेरणा व प्रयासों से डॉ वीरेन्द्र कुमार पाठक के मार्गदर्शन में शिक्षा के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक पहल करते हुए एनसीईआरटी के कक्षा 9 के संस्कृत पाठ्यक्रम में जैन धर्म के मूलमंत्र 'नवकार महामंत्र' को शामिल किए जाने के निर्णय का जैन समाज ने हर्षपूर्वक स्वागत किया है। यह निर्णय न केवल आध्यात्मिक मूल्यों के प्रसार की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है, बल्कि विद्यार्थियों में नैतिकता, अनुशासन और सह-अस्तित्व की भावना विकसित करने में भी सहायक सिद्ध होगा।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के केंद्रीय पदाधिकारी मंडल ने इस पहल पर हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त करते हुए इसे जैन समाज के लिए गौरव का विषय बताया है। नवकार महामंत्र किसी एक संप्रदाय तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समस्त जीवों के प्रति सम्मान, अहिंसा और आत्मशुद्धि का सार्वभौमिक संदेश देता है। विद्यालयी स्तर पर ऐसे आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों का समावेश नई पीढ़ी को सही दिशा प्रदान करेगा और भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों को सुदृढ़ करेगा। यह कदम शिक्षा प्रणाली में नैतिक पुनर्जागरण का प्रतीक है, जो विद्यार्थियों को जीवन में उच्च आदर्शों की ओर प्रेरित करेगा।

जैन समाज के विभिन्न संगठनों एवं विद्वानों ने भी इस निर्णय को ऐतिहासिक बताते हुए सरकार के प्रति आभार व्यक्त किया है तथा आशा जताई है कि भविष्य में भी ऐसे सकारात्मक प्रयास जारी रहेंगे।

जिंदगी जीने की कला सिखाता भगवान आदिनाथ का जीवन - दिनेश मुनि

सिविल लाइन जैन स्थानक में 38 वर्षीतप आराधकों के पारणे सम्पन्न, तपस्वियों की अनुमोदना में उमड़े श्रद्धालु

लुधियाना (पंजाब) : तेज रफ्तार और तनाव से भरे आधुनिक जीवन में जहाँ व्यक्ति भौतिक उपलब्धियों के पीछे दौड़ते-दौड़ते मानसिक शांति खोता जा रहा है, वहीं धर्म और तप की परंपरा आज भी जीवन को संतुलित और सार्थक बनाने का मार्ग दिखा रही है। जैन धर्म में तप, त्याग और संयम को जीवन को परिष्कृत करने का सबसे प्रभावी माध्यम माना गया है। विशेषकर अक्षय तृतीया का पर्व जैन परंपरा में तप, साधना और आत्मशुद्धि का प्रतीक माना जाता है, क्योंकि इसी दिन प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ ने दीर्घकालीन तपस्या के पश्चात प्रथम पारणा किया था। इसी आध्यात्मिक परंपरा को आगे बढ़ाते हुए लुधियाना के सिविल लाइन रोड स्थित श्री एस.एस. जैन सभा, जैन स्थानक में अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर भव्य पारणोत्सव का आयोजन किया गया। श्रमण संघीय सलाहकार दिनेश मुनि म.सा. के सानिध्य में आयोजित इस कार्यक्रम में 38 वर्षीतप आराधकों के सामूहिक पारणे इक्षुरस से सम्पन्न कराए गए। 13 श्रमण-श्रमणी व 25 आराधक-आराधिकाएं का पारणा संपन्न हुआ। इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहे और तपस्वियों की अनुमोदना करते हुए धर्मलाभ प्राप्त किया।

कार्यक्रम के अंत में श्री एस.एस. जैन सभा के पदाधिकारियों ने सभी तपस्वियों, आगंतुक श्रद्धालुओं और सहयोगियों का आभार व्यक्त किया। समारोह में गौतम प्रसादी लाभार्थी परिवार विजयकुमार नीरू जी जैन (जैन पैकवैल) लुधियाना थे। इस अवसर पर 45 साधु-साध्वियों का रहा पावन सान्निध्य रहा।

इस भव्य आयोजन में पूज्य श्री दिनेश मुनि जी म., डॉ. द्वीपेन्द्र मुनि जी म., डॉ. श्री पुष्पेन्द्र मुनि जी म. सहित जिन शासन ज्योति जप साधिका महासाध्वी श्री प्रियदर्शना जी म., दिव्य साधिका उप-प्रवर्तनी महासाध्वी श्री रमेश कुमारी जी म., कोकिलकंठी जैनभारती महासाध्वी श्री मीना जी म., जिन शासन चंद्रिका उप-प्रवर्तिनी महासाध्वी श्री वीरकांता जी म., शान-ए-पंजाब महासाध्वी श्री श्रेष्ठा जी म. पंजाब सिंहनी महासाध्वी श्री स्वाति जी म., तपचन्द्रिका महासाध्वी श्री सुनिधि जी म., प्रवचन प्रभाविका डॉ. मनीषा जी म., कुल 45 साधु-साध्वियों के पावन सान्निध्य ने इस आयोजन को विशेष बनाया।

प्रेषक : श्रमण पुष्पेन्द्र

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

PRGI : DLHIN/25/A4261
Postal Regn. No. DL(ND) 11/6078/2026-27-2028
U (C)

Date of Publication : 22-04-2026
Date of Posting : 28/29-04-2026
E-mail : aissjc1906@gmail.com

भाषा : हिन्दी ✲ वर्ष : 70 ✲ अंक : 8
पृष्ठ : 8 ✲ माह : अप्रैल ✲ सप्ताह : 22 से 28

मूल्य : ₹ 10

सह-सम्पादक : जसवंत जैन-दिल्ली, पीयूष जैन-इंदौर, गौतम दुगड़ जैन-चेन्नई

पाकिस्तान में स्थानकवासी जैन परंपरा की भूली-बिसरी विरासतें...

वर्तमान पाकिस्तान के सियालकोट शहर में मौजूद जैन स्थानक एवं स्थानकवासी समाज के अन्य स्मारक - एक ऐतिहासिक विमर्श

पंजाब प्रांत का प्राचीन नगर सियालकोट जैन धर्म की समृद्ध परंपराओं का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। प्राचीन जैन ग्रंथों में इसे "स्वेतादिका" या "साकल" नाम से उल्लिखित किया गया है, जहाँ भगवान महावीर के विहार और प्रवास का उल्लेख मिलता है। समय के साथ यह नगर विशेष रूप से स्थानकवासी जैन समाज की गतिविधियों का प्रमुख केंद्र बन गया।

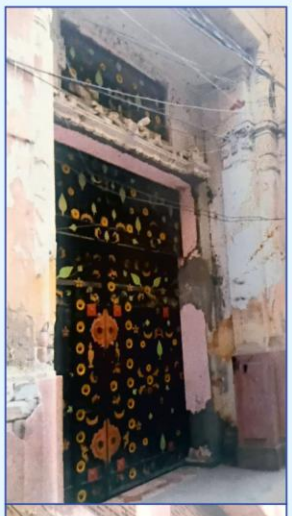

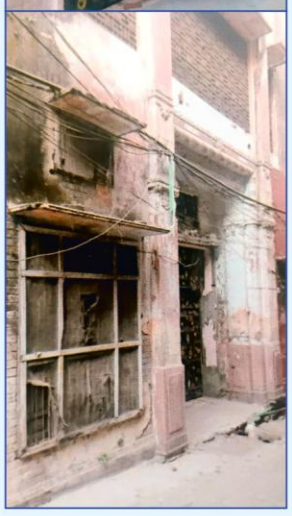

स्वतंत्रता-पूर्व काल में सियालकोट में स्थानकवासी जैन समाज के करीब 1000 घर का समाज अत्यंत संगठित और समृद्ध था। भावड़ा पंजाबी जैन व्यापारी वर्ग यहाँ बड़ी संख्या में निवास करता था। इनका मुख्य व्यवसाय कपड़ा सर्राफा एवं गुड़ मंडी जैसे केंद्रों में था। समाज के लोगों ने सुंदर हवेलियाँ, जैन स्थानक (उपासना-स्थल) तथा सामाजिक संस्थाएँ स्थापित की थी।

विशेष रूप से सराय-भावड़ान मोहल्ला जैन संस्कृति का केंद्र था, जहाँ स्थानकवासी परंपरा के अनुसार स्थानकवासी जैन साधु-साध्वियों के चातुर्मास, प्रवचन और सामाजिक आयोजन नियमित रूप से होते थे।

सियालकोट का जैन स्थानक केवल धार्मिक स्थल ही नहीं, बल्कि सामाजिक और शैक्षिक गतिविधियों का भी केंद्र था। यहाँ साधु एवं साध्वियों के विराजने के लिए अलग-अलग विशाल स्थानक भवन थे।

किन्तु 1947 के भारत विभाजन ने इस समृद्ध स्थानकवासी जैन परंपरा को गहरा आघात पहुँचाया। सांप्रदायिक दंगों और असुरक्षा के कारण जैन समाज को सियालकोट सहित पश्चिमी पंजाब के अन्य क्षेत्रों से पलायन करना पड़ा। भावड़ा जैन समाज की हवेलियाँ और धार्मिक स्थल नष्ट या परित्यक्त हो गए। अनेक परिवारों ने भारत के विभिन्न शहरों-विशेषतः पंजाब, दिल्ली पश्चिमी उत्तर प्रदेश और राजस्थान-में पुनः बसकर अपने सामाजिक और धार्मिक जीवन को पुनर्गठित किया।

वर्तमान समय में सियालकोट में जैन स्थानकवासी समाज का प्रत्यक्ष अस्तित्व लगभग समाप्त हो चुका है, किन्तु उनके स्मारक आज भी इतिहास की गवाही देते हैं। पुराने स्थानक का भवन आज एक गर्ल्स हाई स्कूल के रूप में उपयोग में है। यद्यपि इसके मूल धार्मिक स्वरूप में परिवर्तन आ चुका है, फिर भी इसकी स्थापत्य शैली, विशाल कक्ष और पारंपरिक निर्माण इसकी पूर्व पहचान की ओर संकेत करते हैं। यह भवन आज भी उस गौरवशाली अतीत की मौन साक्षी है, जब यहाँ जैन समाज की धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियाँ चरम पर थी।

इस प्रकार, सियालकोट का जैन स्थानक और उससे जुड़े अन्य अवशेष न केवल एक समुदाय के इतिहास को दर्शाते हैं, बल्कि भारत-विभाजन के सांस्कृतिक प्रभावों का भी जीवंत दस्तावेज हैं। इन स्मारकों का अध्ययन हमें यह समझने में सहायता करता है कि किस प्रकार एक समृद्ध धार्मिक-सामाजिक परंपरा समय की धारा में परिवर्तित होती गई, किन्तु उसके चिन्ह आज भी इतिहास के पन्नों में जीवित हैं।

प्रस्तुति - डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत

(क्रमशः)

जैन गौरव अमर शहीद साबूलाल जैन बैसाखिया

साबूलाल का जन्म सन् 1923 को गढ़ाकोटा, जिला सागर (म.प्र.) में हुआ। आपके पिता पूरनचन्द जैन बैसाखिया थे। आर्थिक विषमता नें पाँचवी से आगे पढ़ने नहीं दिया। उस समय पाँचवी कक्षा तक पढ़े साबूलाल बहुत समझदार माने जाते थे। 1942 का 'भारत छोड़ो आन्दोलन' निर्णायक था। भारत माँ आजादी के लिए तड़फड़ा रही थी। सारे देश में हड़तालों, जुलूसों, सभाओं आदि का आयोजन हो रहे थे। स्त्री-पुरुष सभी इस आन्दोलन में सहभागी थे।

22 अगस्त 1942 को गढ़ाकोटा में एक वृहत् सभा का आयोजन हुआ। सर्व सम्मति से तय हुआ कि अंग्रेजी शासन तंत्र का प्रतीक पुलिस थाना यहाँ है, इस पर से अंग्रजी झंडा यूनियन जेक हटाकर तिरंगा झंडा फहराया जाये। गढ़ाकोटा की वीरांगना पार्वती बाई के नेतृत्व में जुलूस निकला और थाने पर झंडा फहराये। जुलूस प्रारंभ हुआ, जुलूस में लगभग ढाई तीन हजार स्त्री-पुरुष थे। भारत माता की जय, इंकलाब जिन्दाबाद, अंग्रेजों भारत छोड़ो आदि नारे लगते हुए जुलूस थाने पहुँचा। सैकड़ो युवा हाथ में तिरंगा लिए थे, पहले मैं झंडा चढ़ाऊँगा इसकी होड़ लगी थी। पुलिस ने चेतावनी दी, लाठी चार्ज शुरु कर दिया। युवकों की टोलियाँ आगे बढ़ती रहीं। पुलिस सब इंस्पेक्टर गया प्रसाद खरे तथा कुछ सिपाहियों ने गोलियाँ चला दी, साबूलाल अपने चार-पाँच मित्रों के साथ आगे बढ़े, तिरंगा ध्वज लगाने लगे पर धांय-धांय-धांय तीन गोलियाँ चली और वे वहीं ढेर हो गये, अनेक लोग गिरफ्तार कर लिए गये।

साबूलाल, कुंजीलाल और पंडित धनीराम दुबे को गोलियाँ लगी थीं अतः उन्हें तुरंत सागर अस्पताल में भेजा गया। पं. धनीराम और कुंजीलाल बच गये लेकिन साबूलाल मर कर भी अमर हो गये। 24 अगस्त 1942 को प्रातःकाल उनके शव का जुलूस निकाला गया। जनता ने अश्रुपूरित नेत्रों से उन्हें अंतिम विदाई दी।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली की ज्ञान प्रकाश योजना के अंतर्गत प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता का आयोजन

महावीर प्रश्नावली (भाग-4)

प्रश्न 16 : महावीर स्वामी का च्यवन किस तिथि को हुआ था ?

प्रश्न 17 : महावीर स्वामी का च्यवन किस नक्षत्र में हुआ था ?

प्रश्न 18 : महावीर स्वामी का च्यवन काल क्या था ?

प्रश्न 19 : महावीर स्वामी का संहरण किसने दिया ?

प्रश्न 20 : महावीर स्वामी का संहरण किसी कुक्षि से किया गया ?

नोट : सही उत्तर देने वाले सौभाग्यशाली 4 प्रतिभागियों को रुपये 500/- की नगद राशि से पुरस्कृत किया जाएगा एवं विजेताओं के नाम एवं प्रश्नों के सही उत्तर प्रत्येक जैन प्रकाश साप्ताहिक पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे।

प्रायोजक : श्री नरेश आनंद प्रकाश जैन - राष्ट्रीय अध्यक्ष ज्ञान प्रकाश योजना

उत्तर भेजने हेतु संपर्क सूत्र - श्री नरेन्द्र जैन - राष्ट्रीय मंत्री ज्ञान प्रकाश योजना : 98101 63165

अंतर्राष्ट्रीय शतरंज प्रतियोगिता में 7 वर्षीय श्रेयांशी जैन ने जीता स्वर्ण

जयपुर (राजस्थान) : जयपुर निवासी केवल 7 वर्षीय श्रेयांशी जैन ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शतरंज प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीतकर न केवल देश बल्कि समस्त जैन समाज का गौरव बढ़ाया है। इंग्लैंड में आयोजित इस प्रतियोगिता में उनकी उत्कृष्ट प्रतिभा और एकाग्रता ने सभी को प्रभावित किया। जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से श्रेयांशी जैन को इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए मंगलकामनाएं।

अमृतसर के मुदित जैन CBSE 10वीं की परीक्षा में देश में सर्वोच्च स्थान पर

अमृतसर (पंजाब) : केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने कक्षा 10 के बहुप्रतीक्षित परिणामों की घोषणा की। अमृतसर के छात्र मुदित जैन ने 500 में से 500 अंक लेकर शत प्रतिशत परिणाम प्राप्त कर इतिहास रचा। मुदित ने CBSE की 10वीं बोर्ड परीक्षा 2026 में राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त कर जैन समाज का गौरव बढ़ाया है। श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से उनको हार्दिक शुभकामनाएं।

देश में विराजित पूज्य संत-साध्वीजी म. के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन एवं श्रद्धापूर्ण नमन

समाजरत्न दानवीर भामाशाह
लाला आनन्द प्रकाश जी जैन
महिलारत्न
स्व. श्रीमती कमलेश आनन्द प्रकाश जी जैन

NAMO eWaste

Namo e waste Management Ltd.
E waste & lithium in battery recycling
EPR facility
8130393628 admin@namoewaste.com

Vardhman Recycling LLP
Old vehicles recycling with certificate of disposal
Plastic recycling EPR facility
8130393611 vardhmanautorecycling@gmail.com

नरेश आनन्दप्रकाश जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
ज्ञान प्रकाश योजना, जैन कॉन्फ्रेंस

रचना नरेश जैन
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
जैन कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रीय महिला शाखा

सम्पादकीय अस्वीकरण : 'जैन प्रकाश' में प्रकाशित समाचार, लेख एवं विचार संबंधित लेखकों/समाचार प्रेषकों/अन्य स्रोतों के निजी विचार हैं। उनकी सत्यता एवं प्रामाणिकता के लिए वही उत्तरदायी होंगे। संपादक एवं प्रकाशक किसी भी त्रुटि, मानहानि या विवाद के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। यह प्रकाशन भारतीय प्रेस एवं पंजीकरण अधिनियम, 1867 तथा लागू भारतीय कानूनों के अंतर्गत है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा। - डॉ. अमित जैन (सम्पादक/प्रकाशक)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक एवं प्रकाशक अमित जैन द्वारा मुद्रक पारस ऑफसेट प्रा.लि., 118-F, सेक्टर 56, फेज 5, कुंडली इंडस्ट्रियल स्टेट, सोनीपत - 131 028 द्वारा मुद्रित।
केन्द्रीय कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110 001 से प्रकाशित ✲ सम्पर्क : 90197 31906